डॉ. के. श्रीनिवासराव
सचिव
Dr. K. Sreenivasarao
Secretary

साहित्य अकादेमी
(नेशनल अकादमी ऑफ़ लेटर्स)
संस्कृति मंत्रालय, भारत सरकार की स्वायत्तशासी संस्था
Sahitya Akademi
(National Academy of Letters)
An Autonomous Organisation of Government of India, Ministry of Culture

प्रेस विज्ञप्ति

साहित्य अकादेमी द्वारा कृष्णा सोबती की स्मृति में श्रद्धांजलि सभा

जो भी महसूस किया उसे महाकाव्यात्मक दृष्टि देकर सृजित किया – सुकृता पॉल कुमार
हिंदी की विश्वस्तरीय लेखिका थी सोबती जी – मंगलेश डबराल
उनकी भाषा स्त्रीत्व की भाषा थी – मृदुला गर्ग

नई दिल्ली, 7 फ़रवरी 2019 । साहित्य अकादेमी द्वारा आज प्रख्यात लेखिका एवं साहित्य अकादेमी की महत्तर सदस्य कृष्णा सोबती जी स्मृति में एक शोक-सभा का आयोजन किया गया। प्रख्यात लेखिका सुकृता पॉल कुमार ने कहा कि कृष्णा सोबती जी ने अपनी लेखनी से जो भी लिखा, उसे हमें बूँद-बूँद की तरह धीरे-धीरे समझने की जरूरत है। उन्होंने अपनी सूक्ष्म दृष्टि से जो भी महसूस किया, उसे महाकाव्यात्मक दृष्टि देकर सृजित किया। वे अपने हर उपन्यास के लिए भाषा और विषय बदलती थीं। उन्होंने हर स्तर के 'स्टैब्लिशमेंट' का विरोध किया। मंगलेश डबराल ने उनको याद करते हुए कहा कि वे हिंदी या कहें भारत के कुछ गिने-चुने विश्वस्तरीय लेखकों में थीं। उनके सरोकार भी उनके लेखन जैसे बड़े थे। उनके स्त्री पात्र स्नेह या दया के नहीं, बल्कि अपने आप में जुझारू योद्धा थे। उन्होंने लेखन के साथ-साथ एक नागरिक की ज़िम्मेदारी क्या-क्या होनी चाहिए, उससे कभी भी मुँह नहीं मोड़ा। तीसरी दुनिया के लेखकों को किस तरह का होना चाहिए वे इसका आदर्श उदाहरण थीं। उन्होंने उनकी समाज और समाज का ताना-बाना बचाने की चिंता का भी ज़िक्र किया। मृदुला गर्ग जी ने उनकी स्मृति को नमन करते हुए उनकी विनोद वृत्ति के कई संस्मरण सुना कर कहा कि उनकी लेखनी में उत्सवधर्मिता थी। उनकी भाषा स्त्रीत्व की भाषा थी। वे लेखन के लिए हर बार नए मुहावरे ईजाद करती थीं। गंगा प्रसाद विमल ने उनको याद करते हुए कहा कि उन्होंने हिंदी में एक बड़े लेखक होने की जरूरत को पूरा किया। रवींद्र त्रिपाठी ने उनकी भाषा विविधता को याद करते हुए कहा कि एक कथा लेखिका होने के बावजूद उन्हें हिंदी कविता का बेहद गहन और विस्तृत ज्ञान था और वे कविता की केवल सुधी पाठक या गहरी आस्वादक ही नहीं, बल्कि विचारक एवं आलोचक थीं। उनको एक 'सिटीजन राइटर'

... 2/–

रवीन्द्र भवन, 35 फ़ीरोज़शाह मार्ग, नई दिल्ली-110 001, दूरभाष : +91-11-2338 7064, 2307 3002, फैक्स : +91-11-2338 2428
Rabindra Bhavan, 35 Ferozeshah Road, New Delhi-110 001, Phone : +91-11-2338 7064, 2307 3002, Fax : +91-11-2338 2428
E-Mail : secretary@sahitya-akademi.gov.in, Website : http//www.sahitya-akademi.gov.in

के रूप में याद किया जाना जरूरी है। ज्योतिष जोशी ने उनको एक संपूर्ण लेखिका के रूप में याद करते हुए कहा कि उन्होंने स्त्री को पुचकारा या सहलाया नहीं, बल्कि उसे ऐसी हैसियत दी कि वे पुरुषों से आमने-सामने मुकाबला कर सकें। जो उन्होंने लिखा उसी रूप में जीकर भी उन्होंने समाज के सामने अनोखी मिसाल रखी। उन्होंने उनके लेखन को संपूर्ण भारतीय मनुष्य की खोज के रूप में देखा।

सभा के अंत में साहित्य अकादेमी के सचिव के. श्रीनिवासराव ने अकादेमी द्वारा शोक-प्रस्ताव प्रस्तुत किया और इसके बाद दो मिनट का मौन रखकर श्रद्धांजलि अर्पित की गई। श्रद्धांजलि सभा में सौमित्र मोहन, राजेंद्र उपाध्याय एवं ब्रजेंद्र त्रिपाठी तथा कृष्णा सोबती जी की भतीजी सहित कई महत्त्वपूर्ण लेखक, विद्यार्थी एवं प्रकाशक शामिल थे।

(के. श्रीनिवासराव)